पाठ्यचर्या की विषय-वस्तु को कहानियों से जोड़ना | मेरे अनुभव

मधुमिता आर.

कहानियों के प्रति मेरे लगाव के कारण ही मैं एक-दूसरे से जुड़ने के इस माध्यम को कक्षाओं में उपयोग में लाती हूँ। मैं यह उम्मीद करती हूँ कि शायद कहानी पढ़ने और सुनने के प्रति मेरे उत्साह से कुछ छोटे विद्यार्थी प्रभावित हों।

मैं पिछले साल जून में सागर, मध्य प्रदेश के एक स्कूल में नियमित दौरे पर गई थी और बच्चों को सुनाने के लिए मैंने कुछ कहानियाँ तैयार की थीं। कक्षा-1 से 3 के बहुकक्षा बहु-स्तरीय (एमजीएमएल) शिक्षक और मैंने उस दिन की योजना पर चर्चा की। शिक्षक ने मुझे सूचित किया कि उस दिन दो कविताओं को दोहराने का अभ्यास करना था। दोनों कविताएँ पाठ्यपुस्तक से थीं, एक कविता गाय के बारे में थी और दूसरा घोंसला बना रहे एक पक्षी के बारे में। इसलिए, हमने मिलकर कविताओं को दोहराने की योजना में उन जानवरों को शामिल किया जिन्हें बच्चे पहले से जानते थे।

इसके बाद, मैंने "हर पेड़ ज़रूरी है" कहानी को पढ़कर सुनाया (स्तर-2, प्रथम बुक्स)। इस कहानी में संख्याओं, विभिन्न प्रकार के पेड़ों और उन पर बैठने वाले पक्षियों, विभिन्न फूलों और वे कहाँ उगते हैं इसका ज़िक्र है। बच्चे क़िताब में उल्लिखित पेड़ों जैसे, बरगद, पीपल, नीम, इमली, जामुन और पक्षियों व कीड़ों जैसे तोते और मधुमक्खी के नामों से परिचित थे। लेकिन चमगादड़ के चित्र दिखाने और उसके लटकने के तरीक़े की तरफ़ इशारा करने के बाद भी बच्चे कबूतर और चमगादड़ के बीच के अन्तर को नहीं समझ पा रहे थे। फिर जब मैंने बच्चों से कहा कि यह चमगादड़ है, तब उनमें से एक बच्चे ने कहा उसने इसे रात में खाने के बाद बाहर खेलते वक़्त देखा है। इस बातचीत से बच्चों को अपने अनुभव साझा करने और उनसे सीखने का अवसर मिला।

फिर, शिक्षक ने अपने बचपन का क़िस्सा बताया जब उन्हें कई बार जुगनुओं को देखने का मौक़ा मिला। लेकिन जुगनुओं को अब ढूँढ़ना मुश्किल है। बच्चे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि जुगनू को उसकी रोशनी कहाँ से मिलती है। उनके उत्तर बहुत दिलचस्प थे; उन्होंने बैटरी और सौर ऊर्जा का उल्लेख किया और एक टीवी शो का भी जिसमें एक भालू जुगनू को अपनी रोशनी को जंगल में ढूँढ़ने में मदद करता है!

चूँकि हमें पक्षियों और घोंसले से जुड़ी एक कविता करनी थी और हमने पेड़ से सम्बन्धित कहानी पढ़ ली थी, मैंने सोचा कि हम बच्चों को बाहर ले जा सकते हैं, और उन्हें आस-पास के विभिन्न प्रकार के पेड़ दिखा सकते हैं। चूँकि बच्चे स्कूल के आस-पास के घरों से आते हैं, इस भ्रमण ने उन्हें हमें अपने स्थानीय पेड़ों को दिखाने का और उनकी प्रजातियों को इंगित करने का भी मौक़ा दिया।

स्कूल के ठीक सामने एक बड़ा पेड़ है (वह असल में तीन पेड़ हैं जो एक साथ बढ़ रहे हैं) एक बरगद, एक पीपल और एक नीम। तीनों पेड़ों की तने और शाखाएँ एक-दूसरे में गुँथी हुई हैं। हमने इन तीनों पेड़ों की अलग-अलग विशेषताओं जैसे पत्तियों के आकार, रंग और बनावट और बरगद के पेड़ की लटकती जड़ों को इंगित कर उन पेड़ों के बीच के अन्तर को समझने में बच्चों की मदद की। उस पेड़ के नीचे कुछ बुज़ुर्ग लोग आराम कर रहे थे जिन्होंने बच्चों को छूने और महसूस करने के लिए कुछ पत्तियाँ दीं।

बच्चों ने गिलहरियों को हवाई जड़ों के माध्यम से पेड़ पर चढ़ते और कौवे और गौरैया जैसे कुछ पक्षियों को पेड़ की तरफ़ उड़ते और बैठते हुए देखा। एक बच्चे ने पेड़ पर मधुमक्खी का छत्ता देखा और कुहनी से इशारा करके मुझे रुककर उसे देखने को कहा। फिर हम आस-पास थोड़ा घूमे जहाँ हमने पपीता और बेर जैसे अन्य पेड़ों का निरीक्षण किया। बच्चे इन पेड़ों से परिचित थे।

जब हम कक्षा में वापस आए, तो प्रत्येक बच्चे अपने साथ अलग-अलग पेड़ों से पत्ते लाए थे। शिक्षक और मैंने बच्चों से उनके इस भ्रमण पर चर्चा की। फिर हमने अलग-अलग पत्तियों के आकार और उनके नाम को लेकर एक पोस्टर बनाया और उसे कक्षा में लगा दिया। इसके बाद हमने घोंसला बना रही चिड़िया के बारे में एक कविता हाव-भाव के साथ बोली। बच्चों ने पेड़ पर बने घोंसलों में पक्षियों को देखने के बारे में अपने अनुभव साझा किए। एक बच्चे ने बताया कि कैसे एक कबूतर ने उनकी छत पर लकड़ी के टुकड़ों से अपना घर बनाया था।

कहानियों को पाठ्यक्रम की ज़रूरतों से जोड़ना

फिर शिक्षिका ने उस पाठ को शुरू किया जो उन्हें पढ़ाना था और उन्होंने पहले बच्चों से पेड़ पर आधारित एक चित्र चर्चा

की और कुछ संकेतों के साथ उन्हें बताया कि किस तरह पेड़ हमारे दोस्त हैं।

- यदि पेड़ आपके मित्र होते, तो आप उनके साथ क्या करते?
- आप उन्हें कहाँ ले जाते? क्यों?
- आप किन पेड़ों को अपना दोस्त बनाते? क्यों?

बच्चों के उत्तर भी विविध थे। वे मुख्य रूप से आम, अमरूद, अनार, इमली और नीम के पेड़ों को अपना दोस्त बनाना चाहते थे। उन्होंने इन पेड़ों को इसलिए चुना था क्योंकि ये बड़े पेड़ हैं और वे उनके नीचे खेल सकते हैं, उनकी छाया में आराम कर सकते हैं, उनके फल बेचकर पैसे कमा सकते हैं। जब पूछा गया कि पेड़ उन्हें अपने फल देने और उन्हें बेचकर पैसा कमाने देने के लिए क्यों राज़ी होगा?

तब एक बच्चे ने जवाब दिया की पेड़ भी अपने फल देकर दोस्ती में अपना योगदान देगा।

दृष्टिकोण और शैक्षणिक तौर-तरीक़े

मुझे समझ आया कि कहानी सुनाने के तरीक़े को अपनाने और बातचीत व चर्चा के मौक़े देने से न सिर्फ़ मुझे 'हर पेड़ ज़रूरी है' कहानी को बच्चों तक ले जाने का मौक़ा मिला बल्कि इससे शिक्षक को भी अपनी कक्षा की ज़रूरतों के अनुसार इसमें बदलाव कर बच्चों की रुचि और ध्यान को पकड़ने और बनाए रखने तथा निरन्तरता बनाने में मदद मिली।

पाठ्यचर्या की विषयवस्तु भी महत्त्वपूर्ण है जैसे 'हर पेड़ ज़रूरी है' कहानी ने ही बच्चों को सक्रिय और रुचिपूर्ण तरीक़े से भागीदारी करने के लिए प्रोत्साहित किया। बच्चे इसलिए सक्रिय हुए क्योंकि वे इस विषय के बारे जानते थे और चर्चा में अपना योगदान दे सकते थे। बच्चों के बीच इस तरह के संवादों के साथ ही कक्षा में सामूहिक चर्चाओं और साझेदारी का हिस्सा होना सचमुच आनन्ददायक और समृद्ध करने वाला था।

सक्रिय रूप से और तत्क्षण सिखाने के नए तरीक़ों को एकीकृत करने की कोशिश करते हुए पाठ्यचर्या को आगे बढ़ाने का अनुभव मेरे लिए बहुत दिलचस्प था। यह अनुभव न सिर्फ़ बच्चों के लिए बल्कि शिक्षक और मेरे लिए भी काफ़ी आनन्ददायक था। एक तरह से, इस प्रक्रिया के माध्यम से बच्चे अपने परिवेश को कक्षा में पढ़ी जाने वाली बातों से और गहरे व सार्थक ढंग से जोड़ पाए। दिन के अन्त में, शिक्षक ने मुझसे कहा, "मुझे लगा कि आप बस कोई कहानी सुनाने वाली हैं; मैंने नहीं सोचा था कि हम यह सब करेंगे और आज की तय पाठ्य-योजना को भी पूरा कर पाएँगे!" उन्होंने कहा कि इस तरह के शैक्षणिक दृष्टिकोण ने उन्हें आस-पास उपलब्ध सभी संसाधनों को रोज़मर्रा की कक्षा की गतिविधियों के साथ एकीकृत करने का एक तरीक़ा बता दिया था।

बच्चों के लिए दोस्ताना रवैया

उपरोक्त उदाहरण कक्षा की प्रक्रिया का एक उदाहरण है। मैं कई अन्य उदाहरणों के बारे में सोच सकती हूँ जिन्होंने बच्चों के साथ शिक्षक और मुझे चकित किया और दिखाया कि सरल-सी कहानी सुनाने की गतिविधि कक्षा में और हर बच्चे के भीतर सोचने, कल्पना करने और संवाद करने का एक संसार खोलने में कितनी मदद कर सकती है।

अकादमिक भाषा में कहें तो, शैक्षणिक दृष्टिकोण के रूप में कहानी सुनाना सीखने के निम्नलिखित बुनियादी परिणामों को प्राप्त करने में मदद करता है :

- चित्रों को शब्दों से जोड़ना।
- चित्र में दिखाई देने वाली परिचित वस्तुओं के नाम बताना।
- मौखिक रूप से या अगर बच्चे चाहें तो लिखित रूप से (वाक्यांशों/ छोटे वाक्यों में) समझ-आधारित उन प्रश्नों का उत्तर देना जो कि बच्चों की घर की भाषा/ स्कूल की भाषा/ अँग्रेज़ी/ सांकेतिक भाषा की कहानी से सम्बद्ध होते हैं।
- किसी कहानी के पात्रों और घटनाक्रम को पहचान पाना।
- घर की भाषा/स्कूल की भाषा/ अँग्रेज़ी/ सांकेतिक भाषा में पात्रों, कथानक आदि पर मौखिक रूप से अपनी राय रखना और इनसे जुड़े प्रश्न पूछना।
- चित्र बनाकर या कुछ शब्द/छोटे वाक्य लिखकर कहानी पर प्रतिक्रिया देना।
- अपने स्वयं के अनुभवों पर विचार करना और उन्हें कक्षा की चर्चा में शामिल करना।

कहानियों के साथ उनके अपने मूल्य और पाठ्यचर्या की विषयवस्तु से जोड़ने के उद्देश्य की वजह से बार-बार जुड़ने के कारण मुझे बार-बार जॉन होल्ट के उन शब्दों की याद आई जो मैंने उनकी क़िताब *हाउ चिल्ड्रन लर्न* में पढ़े थे : "इसे आस्था (Faith) कह सकते हैं। आस्था यह है कि मनुष्य प्राकृतिक रूप से एक सीखते रहने वाला प्राणी है। इसलिए, हमें बच्चों को सीखने के लिए 'प्रेरित' नहीं करना है। हमें इस बात के लिए बार-बार उनके दिमाग़ों की जाँच-पड़ताल करने की ज़रूरत नहीं है कि वे सीख रहे हैं या नहीं। हमें जो करना चाहिए और बस यही करना चाहिए कि हम दुनिया को जितना हो सके उतना स्कूल और कक्षा में लेकर आएँ; बच्चों को उतनी सहायता और मार्गदर्शन दें जितना उनके लिए ज़रूरी हो या जितना वे माँगें; उन्हें जब बात करने का मन हो उनकी बातों को सम्मानपूर्वक सुनें; और फिर उनके रास्ते से हट जाएँ। बाक़ी बातें सम्भालने के लिए हम उन पर भरोसा कर सकते हैं।'

References

Har Ped Zaroori Hai by Praba Ram and Sheela Preuitt, Pratham Books. Illustrated by Sangeetha Kadur.Translated by Deepa Tripathi. https://storyweaver.org.in/stories/17146-har-ped-zaruri-hai



मथुमिता आर. वर्तमान में चामराजनगर, कर्नाटक में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में भाषा की रिसोर्स पर्सन के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से शिक्षा में मास्टर डिग्री प्राप्त की है। वे बच्चों के साथ जुड़ने के प्रति बहुत उत्सुक रहती हैं, ख़ासतौर पर प्रकृति, कहानी सुनाने और रंगमंच आधारित गतिविधियों के माध्यम से। उनसे *mathumitha.r@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : सन्दीप दुबे **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय